

भारतीय विश्व-विद्यालय संघ में युवा उत्सव - एक परिचय

Rajkumar^{1*} Deepika Logani Trikha²

¹Research Scholar, M.D. University, Rohtak, Haryana

²Research Director, M.D. University, Rohtak, Haryana

भूमिका:- किसी भी राष्ट्र की प्राचीन परंपराओं एवं मर्यादाओं और संस्कृति को सहेज कर रखने में उस राष्ट्र की युवा पीढ़ी का बहुत बड़ा योगदान होता है, क्योंकि युवा पीढ़ी एक सही दिशा में चलती है तो संस्कृति और परंपराएँ विकसित होती हैं, और अगर युवा गलत दिशा में भटक जाता है तो परंपराएँ पतन की ओर चली जाती हैं। इसलिए यदि उस संस्कृति और उन परंपराओं को उन्नति की तरफ ले जाना है तो वहाँ के युवाओं का संस्कारित होना आवश्यक है और युवाओं को संस्कारित करने के लिए उनकी परंपराओं को उनकी मर्यादाओं को समझाने के लिए कुछ ऐसा करने की आवश्यकता होती है जिससे वो एक रोचक तरीके से अपनी उन सभी परंपराओं को और संस्कृति को समझ सकें।

युवा उत्सव उसमें एक बहुत अच्छा माध्यम साबित हो सकता है। इसी सोच के साथ 'भारतीय विश्वविद्यालय संघ के माध्यम से युवा उत्सवों की शुरुआत पूरे भारतवर्ष में की गई, क्योंकि महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अगर उनकी ऊर्जा एक सही दिशा में लगती है तो हम देश को आगे ले जा सकते हैं।

'भारतीय विश्वविद्यालय संघ' जिसके माध्यम से पूरे देश में युवा उत्सव संचालित किए जाते हैं, आयोजित किए जाते हैं, उस विश्वविद्यालय संघ का निर्माण किस प्रकार से हुआ। आज वर्तमान में उस विश्वविद्यालय संघ का क्या रूप हमारे सामने है और किसी भी उत्सव को विधिवत रूप से चलाने के लिए उनकी एक नियमावली होती है, आज के समय में 'भारतीय विश्वविद्यालय संघ' युवा उत्सवों को एक विधिवत नियमावली में बांधकर चलाने का काम कर रहा है।

-----X-----

भारतीय विश्वविद्यालय संघ: एक परिचय

भारतीय के तमाम विश्वविद्यालयों को एक समान मंच पर लाने के उद्देश्य से देश के सभी विश्वविद्यालयों के उपकुलपतियों की एक बैठक भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड रीडिंग ने सन 1924 में शिमला में बुलाई। उस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि सभी विश्वविद्यालयों को एक साथ मिलकर चलना चाहिए जिसके लिए ऐसी ही किसी समिति का गठन किया जाए जो सबको एकता के सूत्र में बांधे रख सके। और उसी के परिणाम स्वरूप सन 1925 में अंतर विश्वविद्यालयी बोर्ड का गठन किया गया। इस बोर्ड का मुख्य कार्य विश्वविद्यालयों की गतिविधियों को बढ़ाना देना था। विशेष रूप से शिक्षा, संस्कृति, खेल-कूद के संबंधित क्षेत्रों की जानकारी एक-दूसरे विश्वविद्यालय में साझा की जाए और एक दूसरे का सहयोग किया जाए।

अंतर विश्वविद्यालय बोर्ड ने समिति पंजीकरण कानून 1860 के अंतर्गत सन 1967 में वैधानिक पंजीकृत स्थान प्राप्त कर लिया था। और सन 1973 में इसका नाम परिवर्तित हुआ "भारतीय विश्वविद्यालय संघ" और आज भी हम इस समिति को इसी नाम से जानते हैं। इस संघ के अंतर्गत परंपरागत विश्वविद्यालय, मुक्त वि-वि-, व्यवसायिक वि-वि-, डीम्ड विश्वविद्यालय आदि सभी आते हैं। इसके अतिरिक्त ये संघ पड़ोसी देशों के विश्वविद्यालयों के भी अपने अंतर्गत लाकर उन्हें सदस्यता प्रदान कर सकता है।

भारतीय विश्वविद्यालय संघ की शुरुआत में युवा कल्याण विभाग सिर्फ सांस्कृतिक विभाग कहलाता था परन्तु बाद में इसे युवाओं से जुड़े हर मामले, चाहे वह कला, संस्कृति या फिर

खेल कूद हों, से जोड़ दिया गया और सांस्कृतिक विभाग का नाम युवा कल्याण विभाग हो गया।

युवा मामलों के मंत्रालय के उद्देश्य

- 1- यूवाओं में संगठन शक्ति स्थापित करने के साथ-साथ युग कल्याण, विद्यार्थियों द्वारा सेवा कार्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा व्यस्क शिक्षा के भावों को जाग्रत करना।
- 2- युवा विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के कल्याण तथा अन्य विश्वविद्यालयों से मधुर संबंध बनाने वाली गतिविधियों को बढ़ावा देना।
- 3- युवाओं के बीच राष्ट्रीय और भावनात्मक एकीकरण को बढ़ाना देना।
- 4- महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के युवाओं का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास का निर्माण।
- 5- आपस में एक दूसरे के बीच मानवीय करुणा, सांस्कृतिक मूल्य, प्रेम, शांति, सौहार्द, एकता, सामन्जस्य, विकास और प्रशंसा के गुण पैदा करना।
- 6- मैत्रीपूर्ण व्यवहार के साथ युवाओं की प्रतिभा को उजागर करने के लिए एक सामूहिक मंच प्रदान करना।

आज हम युवा उत्सवों का जो रूप देख रहे हैं वो इसी भारतीय विश्वविद्यालय संघ द्वारा संचालित है।

युवा उत्सव का अर्थ एवं पृष्ठभूमि

युवा का अर्थ है व्यस्क या परिपक्वावस्था को प्राप्त हो और उत्सव का अर्थ है ऐसा सामाजिक कार्यक्रम जिसमें लोग किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशिष्ट उद्देश्य से उत्साहपूर्वक आनन्द मनाते हैं। शोधार्थी के विषय के अनुसार (संगीत के प्रचार-प्रसार में युवा उत्सवों का योगदान एक आलोचनात्मक अध्ययन) युवा उत्सवों का अर्थ महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम अथवा सांस्कृतिक प्रतियोगिता से है जिसमें महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के युवक एवं युवतियाँ विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे नृत्य प्रतियोगिता, समूह गान प्रतियोगिता, संगीत, प्रतियोगिता, एकल गायन, वादन, वाद्य वृन्द, लोक गीत प्रतियोगिता, नाटक, प्रतियोगिता, इत्यादि का

मंचन करते हैं। महाविद्यालयों में आयोजित इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों को युवा उत्सव के नाम से जाना जाता है।

युवा उत्सव का उद्भव एवं प्रगति

युवा उत्सव का सर्वप्रथम आयोजन 1954 में हुआ तथा इसको यूनिफेस्ट का नाम दिया गया। उस वक्त तत्कालीन प्रधानमंत्री पं- जवाहर लाल नेहरू जी ने इस आयोजन का उद्घाटन दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में किया गया। उस वक्त शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय होता था जो अब नहीं है। 1954 में उस मंत्रालय में एक समिति बनी उस समिति में ये तय हुआ कि देश के सारे विश्वविद्यालयों को एक जगह एकत्रित किया जाये और उनको ये निर्देश दिये जाये कि युग उत्सवों का आयोजन करना है तथा उस आयोजन में सभी को अपने-अपने विश्वविद्यालय की भागीदारी सुनिश्चित करनी है। उस वक्त इन उत्सवों का मुख्य उद्देश्य था कि युवाओं की उर्जा जो कि राष्ट्रीय एकता की रीढ़ की हड्डी है, को रचनात्मक कार्यों में लगाया जाए। परन्तु उस समय युग उत्सवों में खेल कूद की तो विभिन्न प्रतियोगिता थी परन्तु सांस्कृतिक गतिविधियाँ व ललित कलाओं की कोई प्रतियोगिता इसमें शामिल नहीं थी। फिर बाद में शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्रालय के माध्यम से ही एक नई समिति बनाई गई और इन आयोजनों में कला को भी स्थान मिला। तथा तालकटोरा गार्डन के प्रथम आयोजन के बाद इनके आयोजन 1963 तक लगातार होते रहे।

1963 में जाकर ये रूक गए और इनके रुकने के पीछे को कोई स्पष्ट कारण नहीं मिला। किन्तु इतना सुनने में आया है कि इनका आयोजन तालकटोरा गार्डन दिल्ली में होता था, फिर एक बार इनको दिल्ली में ना कराकर दक्षिण भारत (शायद मैसूर) में करवाया गया। वहाँ के आयोजन में प्रशासनिक रूप में कुछ कमी रहने के कारण अनुशासनात्मक दृष्टि से कोई अप्रिय घटना घटी, जिसकी वजह से इनको बीच में ही रोकना पड़ा। परन्तु फिर सन् 1985 में इनका पुनरुत्थान हुआ और तब से अब तक ये लगातार चल रहे हैं।

और 1954 के उस आयोजन का प्रभाव ये रहा कि मैं आज जिन बड़े-बड़े कलाकारों के हम नाम सुनते हैं जैसे हरि प्रसाद चौरसिया, शिव कुमार शर्मा जी, गजल सम्राट जगजीत सिंह, फिल्म अभिनेता अमजद खान, सितार

वादक देव चौधरी जी है और भी बहुत से नाम जो युग उत्सवों की शान रहें।

युवा उत्सवों का उद्देश्य

“युवा उत्सवों का मुख्य उद्देश्य है युवाओं के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना और भारतीय विश्वविद्यालय संघ अपने शासना देश को निभाते हुए सन् 1985 से वार्षिक तौर पर क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर अंतर विश्वविद्यालयों युवा उत्सवों का आयोजन करता आ रहा है। इन उत्सवों का मुख्य उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को जाग्रत करना है तथा इसके अतिरिक्त युवाओं को एक स्वस्थ संवाद के लिए मंच प्रदान करना है ताकि उनमें सौन्दर्य प्रशंसा का कौशल बढ़ सके। इस प्रकार के उत्सवों के आयोजन से हमारे भावी युग कलाकारों को अपनी काबिलियत, प्रतिभा व कौशल प्रदर्शन का मौका मिलता है जिससे उनका मनोबल उठता है।

जहाँ एक तरफ युवा उत्सव मानवीय सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देने का काम करते हैं वहीं दूसरी तरफ राष्ट्रीय व भावुक एकीकरण के लक्ष्य को बढ़ावा देने के लिए एक बहुत ही सुनियोजित व सुव्यवस्थित युवा कार्यक्रम है।”

युवा उत्सवों के माध्यम से युवाओं में हमारे पूर्वजों द्वारा दिये हुए रिवाजों व सांस्कृतिक विरासत का पालन करने की भावना जाग्रत करना सिखाया जाता है जिससे युवाओं में चरित्र निर्माण, काबिलियत व अपने काम के प्रति समर्पण भावना जाग्रत होती है।

युवा उत्सव को औपचारिक शिक्षा भी कह सकते हैं। युवा उत्सवों से युवा विद्यार्थियों को सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होता है और इस तरह की गतिविधियों में भाग लेना युवाओं के लिए बहुत आवश्यक है क्योंकि युवा उत्सव के माध्यम से युवाओं को एक ऐसा मंच मिलता है जहाँ आकर वो बोल सकते हैं, हंस सकते हैं, रो सकते हैं, अपनी भावनाओं को ऊजागर कर सकते हैं तथा खुलकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं। यहाँ उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। बोलने का तरीका, हाव-भाव व दूसरों के साथ व्यवहार कैसा होना चाहिए ये सारे पहलु जो जिंदगी के अहम हिस्से हैं, युवा उत्सव के द्वारा उभरकर सामने आते हैं जो कि युवा के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

आज के आधुनिक व्यक्त जीवन में इंसान एकदम तनाव पूर्ण और दबाव में जीवन जी रहा है। इन सभी तनावों व दबावों से इंसान के मन मस्तिष्क को राहत दिलाने का कार्य युग उत्सव करता है। तथा जीवन जीने की एक शैली है युवा उत्सव।

निष्कर्ष

हमारे देश में ही नहीं बल्कि हमारे हरियाणा प्रदेश में भी विभिन्न संस्कृतियाँ बसती व पलती हैं इन युवा उत्सवों के माध्यम से अलग-अलग संस्कृतियों व बोली भाषा के युवा आपस में मिलते जुलते हैं, प्रेम भाव बढ़ाते हैं तथा एक दूसरे को जानते हैं और इसके लिए उन्हें अपने किसी शिक्षक की आवश्यकता नहीं पड़ती बल्कि ये एक स्वभाविक प्रक्रिया है। अतः इससे राष्ट्रीय एकीकरण की भावना के बल मिलता है जो कि युवा उत्सवों का एक मुख्य उद्देश्य है

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

inter university youth festivals {report}2013-14
forqan qamar, seceratary general AIU

अग्रवाल, पुरोषोत्तम नारायण ,नालंदा अद्यतन कोष

डॉ संपसन डेविड ,महासचिव ए.आई.यू. द्वारा लिए गए
साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर

Corresponding Author

Rajkumar*

Research Scholar, M.D. University, Rohtak, Haryana